The executive summary of Minor Research Project submitted to WRO-UGC Pune.

Principal Investigator- Dr. Mrs. P. B. Deshmane, Associate Professor in Hindi.

इक्कीसवीं शती की हिंदी महिला कथा साहित्य में मनोविज्ञान।

डॉ. पी. बी. देशमाने (के.एस.के.महाविद्यालय, बीड.)

अति प्राचीनकाल से विश्वसाहित्य में महिलाऐं अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय देती रही है। सृष्टि के आरंभ से ही नारी साहित्य का केंद्र बनी । कालान्तर में वह स्वयं साहित्य सृजन की दिशामें उन्मुख हुई। वैदिक युग से ही नारी, साहित्य के क्षेत्र में पुरुष का साथ देती आई हैं। मध्ययुगीन बहुत से कवयित्रीयोंने अपने गीतों से साहित्य कानन को मुखरित किया है। वर्तमान युग में भी वह लेखन के क्षेत्र में अपनी योग्यता कों प्रमाणित कर रही है। कहानी के क्षेत्रमें राजेंद्र बाला घोषको हिंदी की प्रथम महिला कथाकार स्वीकार किया गया है। इनकी दुलाईवाली कहानी की रचना के बाद हिंदी कथालेखन के क्षेत्र में अनेक महिलाओंने पदार्पण किया। हिंदी की प्रारंभिक लेखिकाओं में शैलकुमारी देवी, रुक्मनी देवी, यशोदादेवी, गिरिजा देवी के नाम प्रमुख रहे है। इन महिलाओंने अपने साहित्यमें एक और समाज में नारी की करुण स्थिति को चित्रित किया तो दूसरी ओर नारी के त्याग और बलिदान का भी वर्णन किया है। ये लेखिकाएँ उपदेशात्मक लेखनद्वारा नारी जीवन में सुधार लाना चाहती थी, परंतु आज महिला कथाकारों की कृतियों में नारी का मानसिक संघर्ष साकार हो उठा है। विशेषकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी कथालेखन के क्षेत्र में अनेक महिलाएँ अपना स्थान बना चुकी है। उन्होनें अपनी अनुभूति के आधारपर नारी की मानसिकता को बडी गहराई से प्रस्तुत किया है। ये लेखिकाएँ पुरुष लेखकों की तरह नारी को महिमान्वित नहीं करना चाहती, तोये एक विशेष दायरे के नारी की पहचान समस्त परिमतियों के साथ उभारता है। यह विशेष दायरा है पढ़े-लिखे मध्यमवर्गीय नारियोंका । इन लेखिकाओंने अपनें कथासाहित्य में नारी की मन:स्थितियों को अति विशिष्टता और स्वाभाविकतासे व्यक्त किया है। नारी जीवन के जो चित्र दन लेखिकाओने प्रस्तुत किए है, वे प्रभावशाली और सजीव है। हिंदी भाषा में स्वातंत्र्योत्तर काल के महिला लेखन में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को, दाम्पत्य सम्बन्धों से परे नये संदर्भो एवं मान्यताओं के साथ परखा है। वैयक्तिक आक्रोश, अजनबीपन,कुंठाओं आदि की अभिव्यक्ति भी इनमें हुई है। इन लेखिकाओंने नारी को सहज मानव के रुप में स्थापित किया है। इन्होंने अपनी कृतियों में सामाजिक दायित्व के निर्वाह के साथ ही आर्थिक प्रसंगों एवं राजनीतिक स्थितियों को भी प्रमुखता दी है। इन कथा साहित्यकारों में निरुपमा सेवती, मंजुल भगत, शुभा वर्मा, मृदुला गर्ग, सुनिता जैन आदि प्रमुख महिला कथाकार है।आज जीवन की जटिलताओं के कारण व्यक्ति में अकेलेपन की पीड़ा गहराने लगी है। विषम स्थितियों में मनुष्य अपने परिवेश से कभी-कभी अकस्मात पृथक हो जाता है। ऐसी स्थिति अक्सर महानगरीय जीवन में उत्पन्न होती है। महानगरीय जीवन की जटिलताएँ व्यक्ति की आस्था कम होती हुई दिखाई दे रही है। इस अकेलेपन की स्थिति को स्त्री भी अनुभव कर रही है। महानगरीय जीवन की स्थितियों में , घर से दूर काम करनेवाली स्त्री, परिवार से अलग होकर नितान्त अकेली हो जाती है। अपने कार्य के दबाव एवं तनाव के कारण ऐसी स्त्रियाँ परिवार के मध्ये मी स्वयंम् को अकेला ही अनुभव करती है, रिक्तता और एकाकीपन उसके जीवन को सुना करने लगता है। इस अकेलेपन और सूनेपर को डॉ. शशिप्रभा शास्त्री के 'वीरान रास्ते और झरना', उषा प्रियवंदा के

'रुकागी नहीं राधिका' व निरुपमा सेवती के 'बँटता हुआ आदमी में ' देखा जा सकता है। २१ वी शती में कथा साहित्य के क्षेत्र में महिला लेखिकाओंने अपने सामर्थ्य का परिचय दिया है। सन 2000 के पूर्व मन्नु भंडारी, उषा प्रियवंदा, मृदुला गर्ग, कृण्णा सोबती आदि ने इस दृष्टि से पहले जमीन तैयार की थी, उत्तर आधुनिक युग में प्रभा खेतान, सुधा अरोडा, रमणिका गुप्त, प्रतिभा कटियार, विमा खरे आदि ने इस दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य किया है। महिला लेखिकाओंने अपनी कहानियों में महिलाओं की संवेदनाएँ, उनकी बदली हुई मानसिकता, पारिवारिक समस्याओं का चित्रण तथा अपने समय के यथार्थ का आकलन करते हुए विचारशील कथा साहित्य का निर्माण किया है। मध्यमवर्गपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, जुल्म और शोषण को चित्रीत करने में महिला कथाकारों को सफलता प्राप्त हुई है। इस दृष्टि से २१ वी शती के महिला कथाकारों का कथासाहित्य विशिष्टता प्राप्त कर चुका है। इन लेखिकाओं के इस मनोवैज्ञानिक विशिष्टता को स्पष्ट करना मेरे लघु शोध प्रकल्प का प्रमुख लक्ष्य होगा।

Deshmane

Principal Investigator
Dr. Mrs. P. B. Deshmane,
Associate Professor in Hindi.

सार्थक उपलब्धि - २०१३

दि न्यू मिरज एज्युकेशन सोसायटी संचालित,

कन्या महाविद्यालय, मिरज एवं

महाराष्ट्र राज्य हिंदी अकादमी के सहयोग से आयोजित

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २१ वाँ अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दि. २३ एवं २४ दिसंबर

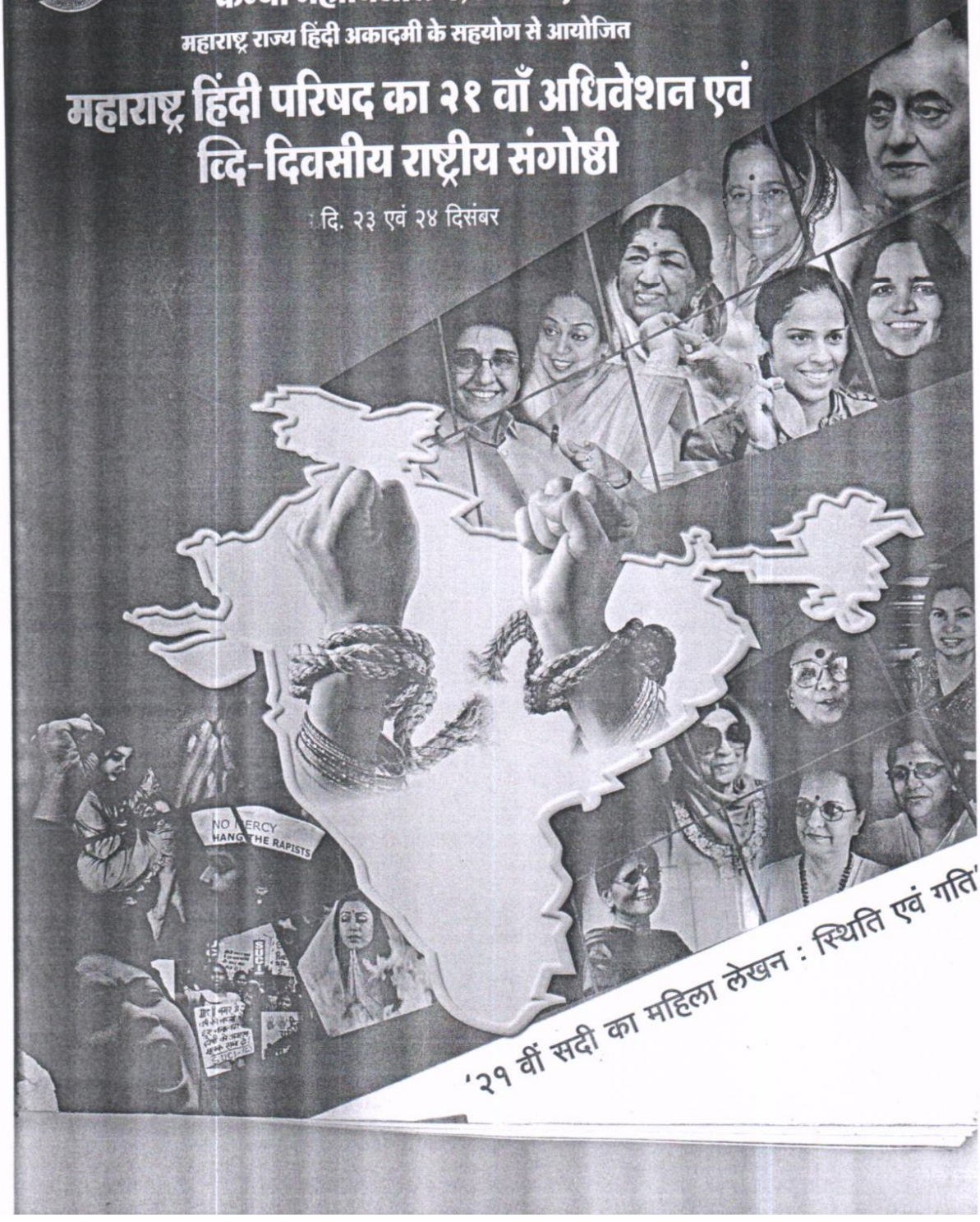

'२१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति'

अनुक्रमणिका

२१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति और गति
उपन्यास साहित्य के संदर्भ में

♦ वेश्या-जीवन की करूण गाथा ''सलाम आखिरी''	डॉ. मधुकर खराटे	१
♦ २१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति (उपन्यास के संदर्भ में)	डॉ. पूनम त्रिवेदी	७
♦ २१ सदी में स्त्री एवं स्त्रीलेखन	डॉ. सन्तोष मोटवानी	११
♦ इक्कीसवीं शती का हिंदी उपन्यास साहित्य-नारी विमर्श	प्रा. सौ. माधुरी शिवाजीराव पाटील	१४
♦ इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में युवा संस्कृति के बदलते तेवर	डॉ. माधवी शिवाजीराव जाधव	१७
♦ मैत्रेयी पुष्पा का नारी प्रधान उपन्यास- 'अल्मा-कबूतरी।'	प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर	२०
♦ नासिरा शर्मा के उपन्यासों में चित्रित नारी चेतना	डॉ. रमाकांत आपरे	२३
♦ हिंदी महिला उपन्यास साहित्य : स्थिति एवं गति	प्रा.डॉ. एम. ए. येल्लूरे	२५
♦ मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'विजन' में चित्रित स्त्री शोषण	प्रा. संजीवनी राजेंद्र नाईक	२७
♦ २१ वीं सदी का महिला लेखन उपन्यास के संदर्भ में	डॉ.अलका श्री. डांगे (लव्हेकर)	२९
♦ २१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति-उपन्यास के विशेष संदर्भ में	प्रा. डॉ. पार्वती देशमाने	३५
♦ २१ वीं सदी का महिला उपन्यास लेखन : विविध आयाम	प्रा. डॉ. सरोज पाटील	३९
♦ २१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति ('दौड़' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	श्रीमती लीला रामचंद्र भिंगारदेवे	४३
♦ कॉरपोरेट जगत की दिशा में चकाचौंध करनेवाला बाजार : एक ब्रेक के बाद - अलका सरावगी	डॉ. पिरू आर. गवली	४६
♦ २१ वीं सदी के उपन्यास लेखन में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान	प्रा. प्रवीणकुमार न. चौगुले	५०
♦ २१ वीं सदी का महिला लेखन : परिवर्तनशील दृष्टिकोण (महिला उपन्यासकारों के संदर्भ में)	डॉ. कल्पना किरण पाटोळे	५४
♦ यामिनी कथा एक मूल्यांकन	प्रा. कृष्णा गायकवाड	५६
♦ इक्कीसवीं सदी में महिला लेखन 'अंतर्वंशी' उपन्यास के संदर्भ में	डॉ. वृषाली मधाले	५७
♦ कॉरपोरेट जगत से सीधा साक्षात्कार-ब्रेक के बाद	डॉ. रेखा गाजरे	६०
♦ '२१ वीं सदी का महिला लेखन स्थिति एवं गति' (उपन्यास के संदर्भ में)	डॉ.भालेराव व्ही.के.	६४
♦ पारिवारिक त्रासदी का आख्यान : दौड़	डॉ. एकनाथ पाटील	६६
♦ मानवीय चेतना पर दस्तक : 'तापसी'	डॉ. कांता एम. भाला/राठी	७०
♦ 'शहर के नाम में' नारी की स्थिति और गति	डॉ. रूपाली संपत दळवी	७४
♦ २१ वीं सदी का महिला लेखन : 'दौड़' उपन्यास के संदर्भ में	प्रा. सुनील गायकवाड, डॉ. संजय चिंदगे	७६
♦ चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में नारी विमर्श : 'कथा सतीसर' उपन्यास के संदर्भ में	प्रा. प्रमोद मनोहर चौधरी	७८
♦ शशि सहगल का 'मौन से संवाद'	प्रा.सौ. सुचिता संतोष भोसले	८२

२१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति-उपन्यास के विशेष संदर्भ में

प्रा. डॉ. पार्वती देशमाने
हिन्दी- विभाग अध्यक्ष
सौ.के.एस.के. महाविद्यालय, बीड.

हिन्दी उपन्यास के इतिहास पर नयी विहंगम दृष्टि डाली जाए तो पिछले पाँच दशक के उपन्यासों में नारी की स्थिति में यथेष्ट परिवर्तन एवं उतार चढ़ाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

आठवें दशक के अन्त में स्त्री-विर्मश ने अपनी गति पकड़ ली और नौंवे दशक का यह प्रमुख विषय बना गया। नारी विमर्श केवल नारी की मुक्ति से निरुपित नहीं होता अपितु विमर्श, शब्द विवेचन, विचार, समीक्षा, परीक्षण, ज्ञान और कोश गत अर्थ में चरम बिन्दु को परिभाषित करता है। इस दृष्टि से गहरे अर्थ वाला यह शब्द नारी मुक्ति या नारी स्वतन्त्रता के साथ नारी की अस्मिता, चेतना, स्वाभिमान आदि तत्वों को अपने भीतर समेटे हुये हैं। नारी का अपने जीवन जीने का ढ़ंग व स्वयं कर्त्ता बनाने का प्रयास या आत्म निर्णय की क्षमता हासिल करना नारी विमर्श के अन्तर्गत आता है।

नारी की अधिकार सजगता ने स्त्री स्थिति, उसकी मान्यताओं और संस्कारों को बहुत प्रभावित किया है। उसकी प्राचीन मान्यताएं और मूल्य बदल चुके है। वह वैयक्तिक स्तर पर हस्तक्षेप से रहित जीवन जीने की अभिलाषी है। नारी स्वातन्त्रता और आधुनिकता बोध ने उसकी सोच को नयी दिशा दी है। परिवार व जिन्दगी के बीच उसे किसी का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं है। प्राचीन व्यवस्था के प्रति उसका मोह भंग हो चुका है। नारी चेतना, नयी शिक्षा प्रणाली और नारी के बदलते परिवेश के कारण प्राचीन सामाजिक संरचना के ढांचे में दरारें दिखाई देने लगी हैं।

परिणाम स्वरूप मूल्यों में गहरा बदलाव आया है। नारी सदियों से चले आ रहे परिवार के मुखिया को चुनौती दी है। पुरूष अपने ड़गमगाते और टूटते प्रभुत्व की सुरक्षा में प्रयत्नशील है, तो नारी उसे लगातार हिलाकर सम्पूर्ण ध्वस्त करने की चेष्टा के संलग्न है। पुरूष अपने लिये यौन स्वछन्दता चाहता है और नारी के सतीत्व को सीखचों में बन्द रखना चाहता है। पुरूष का यह दोहरा नैतिक मापदण्ड और नारी के स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्राप्त करने की चेष्टा दोनों आपस में टकराकर संघर्ष की मुद्रा लिए हुए है। संघर्ष और चुनौती आज के उपन्यासों का विषय है।

२१ वीं सदी के प्रमुख महिला कथाकारों में नासिरा शर्मा, लता शर्मा, अनामिका, रजनी गुप्ता, मैत्रेयी पुष्पा, प्रतिभा जेन्री, गीतांजली श्री, सिम्मी हर्षिता, सुधा अरोडा, मधु कांकरिया, उषा यादव आदि के नाम अहमियताना से लिये जाते है।

कृष्णा सोबती का साहित्य उन्हें बोल्ड लेखिका के रूप में रेखांकित करता हुआ, विद्रुपताओं के कारण बहुचर्चित रहा। ''मित्रो मरजानी'' उपन्यास में मित्रों निर्लज्जापूर्वक मुँह खोलकर अपनी शारीरिक अतृप्ति का बखान करती रहती है। यह नीरस और पुरानी मध्यमवर्गीय संस्कृति के विरूध्द सर्वस्व दांव पर लगा देने वाली स्त्री का प्रथम विद्रोह है।

उनकी नायिका रति भी ठीक ऐसी ही है। रति शापमुक्त स्त्री बनना चाहती है। दिवाकर के सम्पर्क से पूर्ण नारीत्व को पहली बार महसूसती है और बलात्कार के दंश को भूल जाती है। रति स्वयं अपनी अद्भुत जिजीविषा और आस्था के सहारे शापमुक्त हुई।

कृष्णा सोबती ने मित्रो और रति की सर्जना करके हिन्दी में पहले पहल रति के रूप में स्त्री की वर्जित छवि को अन्तिम

सत्य के रूप में प्रतिष्ठित किया है। कृष्णा सोबती की नारी स्थूल दृष्टि से देखने पर कामनाओं द्वारा संचालित विशुद्ध देह स्तर पर जीती नारी है। लेकिन जरा सी गहराई में उतरते ही वह स्त्री अस्मिता की ऊँचाईयों को छूने के प्रयास में जिन मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था व्यक्त करती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

आखिरी डेढ़ दो दशकों का स्त्री विमर्श अपेक्षाकृत अधिक जटिल, अनेक आयामी, धारदार और विवादास्पद है। आज भूमण्डलीकरण के इस दौर में स्त्री पुन: कुछ नये सवाल उठा रही है। उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण के पाये पर टिकी उत्तर आधुनिकता ने इतिहास के साथ-साथ सनातन सार्वभौमिक मूल्यों की समाप्ति की घोषणा कर दी है। किसी भी कृति को महत्व देते लेखक से उसकी केन्द्रीय और दिशा- निर्देशन की भूमिका छीन ली है। आज का लेखक अपने उपन्यासों में वह सब दर्ज कर रहा है जिसे दस बरस पहले दिन के उजाले में वह सोच भी नहीं सकता था। आज की स्थिति अलग है। हमाम में सब नंगे तो कैसा डर, कैसी शर्म। यहाँ ''हमजाद'' उपन्यास की चर्चा करना चाहुँगी। जिसके सारे मूल्य, सारी संस्कृति पुरूष की देह-भूख पर न्यौछावर हो गये हैं। उसका नायक टी.के. अपनी बेटी, बहन, नातिन समेत ९८४ स्त्रियों से सम्बन्ध बना चुका है।

यह दौर मूल्यहीनता का दौर बेशक हो पर इन्सान अपनी इन्सानियत से इतना नहीं गिरा कि देह सम्बन्धों में संस्कार और वर्जनाओं को अंगूठा दिखाता चले। रूग्ण मानसिकता वाले लोग खबर बनकर कुछ दिनों के लिए जरूर छा जाते हैं, पर उन्हें वक्त का प्रतिनिधि नहीं कहा जा सकता है।

व्यवस्था की विसंगतियों के विरोध के रूप में नारी विमर्श में उभार आया। महिलाएँ मध्ययुगीन सीमा को तोड़कर बाहर आ चुकी है। वे हर दृष्टि से स्वतंत्रता चाहती हैं। व्यवस्था द्वारा अपने शोषण को पहचानते हुए वे उसका मुखर विरोध कर रही है।

समाज में दहेज, बलात्कार, यौन उत्पीड़न, घरेलु हिंसा आदि ने नियति व अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' (१९९४) में प्रमुख पात्र मन्दाकिनी न केवल परिवार और समाज द्वारा स्त्री के लिए निर्मित जकड़नों को तोड़ती है, अपितु शोषण के विरूध्द डटकर खड़ी होती है। 'चाक' (१९९७) 'झूला नट' (१९९९) और 'अल्मा कबूतरी' (२०००) का भी मुख्य विषय ग्रामीण परिवेश में उत्पन्न नारी चेतना है। ''अलमा कबूतरी'' में अल्मा अपने परिवेश से संघर्ष करती हुई सत्तापीठ तक जाने में समर्थ होती है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'अगन पांखी' में चंदर व उसकी मौसी भुवन के प्रेम-प्रसंग व शारीरिक सम्बन्धों को वर्णित किया गया है। मैत्रेयी ने 'इदन्नमम' से जो शुरुआत की थी 'चाक', 'भूला नट', 'अल्मा कबूतरी' से आगे बढ़ाते हुए 'अगन पांखी' तक पहुंचाया है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में स्त्री संघर्ष मुखर हुआ है। उन्होंने अपनी आत्मकथा को भी उपन्यास का ही रूप दिया है, वे कहती हैं ''इसे उपन्यास कहुँ या आपबीती''। इस पुस्तक के केन्द्र में मैत्रेयी से अधिक कस्तुरी की संघर्ष गाथा है। 'इदन्नमम' की मंदा, 'चाक' की सारंग, 'अल्मा कबूतरी' की अल्मा और कदम पुरूष की प्रतिशोधात्मक हिंसा का शिकार हुई है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में भी नारी दर्शन स्पष्ट रूप से मुखरित होता है, उनके 'छिन्न मस्ता' (१९९३) 'अपने-अपने चेहरे' (१९९४), 'पीली आंधी' (१९९६) आदि उपन्यासों के केन्द्र में नारी ही है। अपने-अपने चेहरे उपन्यास में स्त्री पीड़ा और टीस को वाणी मिली है।

चित्रा मुद्गल का आवां उपन्यास (२०००) में मुख्यत: नारी विमर्श केन्द्रित उपन्यास है। इस उपन्यास में नारी जीवन से जुड़ी कई समस्याओं का अंकन किया गया है। इस उपन्यास में तरूणी नमिता का जीवन संघर्ष वर्णित है। जो घुटन भरे मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मती और बढ़ती है। महानगर के दहकते हुए परिवेश में तपकर अपने संघर्ष के लिए स्वयं को तैयार करती है। नमिता का संघर्ष इसके अलावा पुरूष देह सम्बन्ध को लेकर भी है। बचपन में वह बलात्कार का शिकार हुई, युवती होने पर मजदूर संघ का नेता उसके साथ जबरन यौन सम्बन्ध स्थापित करता है। कुछ समय पश्चात् एक

करोड़पति आभूषण विक्रेता उसका उपयोग केवल सन्तान उसकी कोख में रखने के लिए करता है। इन घटनाओं से आहत नमिता के व्यक्तित्व का रूपान्तरण स्वावलम्बी स्त्री के रूप में होता है। यही आधुनिक स्त्री का विकल्प है। ''आवां'' उपन्यास ट्रेड यूनियनों और मजदूरों के संगठनों के बीच संघर्ष को प्रस्तुत करता है। चित्रा मुद्गल का ''एक जमीन अपनी'' आज के विज्ञापन जगत से जुड़े अनुभवों का एक अद्भूत भण्डार है। इसमें ग्लैमर की दुनिया से विभ्रमित नारी का चित्रण है, जिसमें नारी अपनी देह के द्वारा बाजार के लुभावने संदेशों को उपभोक्ता तक पहुंचाती है।

इसी कड़ी में ''हमको दिया परदेस'' उपन्यास में मृणाल पाण्डे एक स्थान पर कहती है कि ''औरत पैदा नहीं होती बनाई जाती है।'' यह अंग्रेजी से हिन्दी में अनुदित उपन्यास है। मर्दवादी व्यवस्था के मकड़जाल में फंसी नारी को निकट से देखने का प्रयास इसमें महत्वपूर्ण है। यह उपन्यास स्त्री जीवन के बदरंग सत्य की अंतरंग तस्वीर प्रस्तुत करता है।

हिन्दी साहित्य की स्त्री तमाम कोशिशों के बाद भी सहचर पुरूषको उतना मानवीय नहीं बना सकी लेकिन अपने लिए आत्म सम्मान पूर्ण रास्ता जरूर तलाश सकी है। मृदुला गर्ग ने ''कठ गुलाम'' में अनोखे ढंग से स्त्री विमर्श को स्थान दिया है। मृदुला गर्ग मानती है कि ''पुरूष अनादि काल से प्रकृति का अनवरत दोहन और स्त्री का मानसिक शोषण करता आया है, जिसके चलते आज धरती और स्त्री दोनों बंजर हो गई है। थोड़े से दुलार और स्नेह स्पर्श से दोनों लहलहा सकती हैं।''

समकालीन लेखन में स्त्रियों की देह के प्रश्न को नकारा गया है। स्त्री विमर्श की बहुचर्चित लेखिका अर्चना वर्मा यौन पतिव्रत, सतीत्व, अक्षत यौनित्व जैसे मूल्य स्त्री के सम्मान का नहीं पुरूष के अहंकार की दीनता, असुरक्षा का पैमाना है। पितृ सत्ता के नियम बंधन स्त्री की बेड़ियां हैं।

ममता कालिया के उपन्यास ''बेघर'' का नायक परमजीत अपनी प्रेमिका संजीवनी को केवल इसलिए छोड़ देता है, कि उसके जीवन में पहला पुरूष परमजीत नहीं। कौमार्य के मिथक की मार झेलती हुई संजीवनी वापस अपनी सूनेपन में रह जाती है। जबकि परमजीत रमा के रूप में ऐसी कुंवारी पत्नी से विवाह करता है, जो जीवन शैली में जड़ और जकड़ बन्द है, जिसे बदलने में परमजीत का भावात्मक, दैहिक एवं मानसिक धरातल जड़ होता चला जाता है और अकेलापन उसकी मृत्यु का कारण बनता है। ममता कालिया ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री के कौमार्य को लेकर पुरूष समाज की सोच पर चोट की है।

ममता कालिया ''एक पत्नी के नोटस'' में पति पत्नी के दाम्पत्य सम्बन्धों का पुनर्निरीक्षण करते हुए, प्रश्न उठाती हैं कि क्या पत्नी का सम्बन्ध मात्र सैक्स पर आधारित है? देह का आकर्षण समाप्त होते ही क्या विवाह से प्रेम गायब हो जाएगा? पुरूष का सम्बन्ध क्या मात्र दैहिक है? शारीरिक है, मानसिक नहीं। क्या पुरूष की सौन्दर्य लिप्सा को सन्तुष्ट करने के लिए स्त्री शरीर और मेधा का हवन करती रहेगी, ताकि उसका पति उसे छोड़कर दूसरी की तरफ न भागे? क्या पति-पत्नी के मध्य आपसी समझ और आत्मीयता दाम्पत्य का आधार नहीं हो सकते? ''लक्ष्यबोध'' उपन्यास इसी कड़ी में एक अकेली स्त्री की संघर्ष गाथा को प्रस्तुत करता है। यह मन को झिंझोड़ने वाला उपन्यास है, जो बार-बार एक तीखा सवाल प्रस्तुत करता है कि आधुनिकता के बड़े-बड़े दावों के बावजूद क्या स्त्री की दुनिया सचमुच बदल गई है। क्या आज स्त्री पुरूषों के क्षेत्र बंटे हुए नहीं है? स्त्री का ऊँचे पद पर आसीन होना क्या पुरूषों की दुनिया में खलबली नहीं मचा देता? इस उपन्यास की नायिका डॉ. मनोरमा बार-बार इस सवाल से जूझती है, थकती, हारती है। यहाँ तक कि उसे अपना जीवन अकेला और उजाड़ लगने लगता है। घर की दहलीज से बाहर पैर रखकर अपने बलबूते पर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। बिना किसी की कृपा व सहारे के, इस संघर्ष में उसे किन-किन संघर्षों का सामना करना पड़ता है, कैसे-कैसे निर्वासनों का दण्ड भोगना पड़ता है।

''लक्ष्य बेध'' की कथावस्तु भागलपुर में तिलका मांझी मौहल्ले में एक बड़े और आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की लड़की मनोरमा के इर्द-गिर्द घूमती है। उसके वाइस चांसलर

बनने तक के सफर में उसे कितना कुछ झेलना पड़ता है।

इसी कड़ी में सिम्मी हर्षिता का उपन्यास ''रंगशाला'' यौन रिश्तों की पड़ताल है। नारी मुक्ति की उन्मुक्त देह गाथा के विरुद्ध यह कथा रचना दाम्पत्य जीवन के पतिव्रत या पत्नीव्रत के पुराने मिथकों के सहारे उच्च मध्यमवर्गीय समाज में व्याप्त यौन भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है। रंगशाला में विवाहेत्तर यौन सम्बन्धों के विरुद्ध एक स्त्री का यौन विद्रोह है, जो शंकामय और अविश्वास टूटन घुटन के बीच विस्फोट का रूप धारण करता है।

गीताजंलि श्री का उपन्यास 'तिरोहित' स्त्री विमर्श पर नये तेवर प्रस्तुत करता है। 'तिरोहित' उपन्यास में ओम बाबू की क्रियाओं, प्रति क्रियाओं, क्रूरताओं, वचन भंगिमाओं से गुजरते हुए एक अनायास सवाल कौंधता है कि क्यों पुरूष के मन में स्त्री को लेकर इतनी शंका, घृणा और हिंसा है? इस उपन्यास में वह स्त्री शोषण के ज्वलंत मुद्दों को उठाती है।

''खानाबदोश ख्वाहिशे'' उपन्यास आज की नारी की व्यथा कथा प्रस्तुत करता है। इसकी लेखिका जयंती आज की स्त्री का एक नया चेहरा प्रस्तुत करती है। इस उपन्यास में उसकी आत्मविश्वासी छवि व उसकी निडर आवाज को उभारा गया है।

'तेज प्रवाह' में बहती चुस्त कथा के भीतर अप्रत्याशित कथाओं के रेशे-रेशे पकड़ती लेखिका ने बड़ी संजीदगी से पात्रों के नये पनपते सपनें, परवान चढ़ते-प्रेम सम्बन्धों की विविध रंगी व्यथा कथाएँ और इन्हीं में पिसते रिश्तों की क्षरित होती संवेदनाओं को पूरे निर्द्वन्द्व भाव और प्रखर जीवन दृष्टि के साथ उभारा है।

''कुछ अनकही'' मृदुला बिहारी का उपन्यास स्त्री जीवन के दुख और आँसू से भरे जीवन सच को प्रस्तुत करता है।

इस दशक का कथा साहित्य विघटनशील दाम्पत्य सम्बन्धों की ऊबाउ आवृत्ति करता है, न कि अभिव्यक्ति के औजारों के रूप आत्मदया, समर्पण, हताशा और पराजय जैसी स्त्रियोचित भावों को व्यक्त करता है।

इस युग में नारी बनी बनाई कसौटियों को तोड़ने या उनपर प्रहार करने के तनाव भरे व्दंव्द से मुक्त होकर समाज में अपनी पुख्ता पहचान बनाने के लिए विशेष रूप से आग्रहशील हुई है। शराबबन्दी, चिपको आन्दोलन, नर्मदा बचाओं, जन साक्षरता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी करके उसने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपयोगिता और अनिवार्यता सिध्द कर दी है।

इस प्रकार आधुनिक नारी, आत्मचेतना से सजग और आत्म निर्णय से युक्त होकर केवल सामन्ती परिवेश और बंधी बंधाई मर्यादाओं के गढ़ को तोड़ती है अपितु साथ ही सकारात्मक तरीके से अपने व्यक्तित्व की रचना करती है। इस दौर में ऐसे अनेक ऐसे उपन्यास जो नारी विमर्श की दृष्टि से अपनी पहचान बनाए हैं।

कुल मिलाकर नारी विमर्श को परिपक्वता देने की सामर्थ्य गिनी चुनी लेखिकाओं में है। नये सन्दर्भों में नारीत्व की परिभाषा- जिसका पृथक अस्तित्व हो, अपनी छवि, अहम गौरव हो, उपयोगिता, स्वाभिमान और सार्थकता हो, जो न पुरूष से हीन मानी जाए, न बराबरी में अपनी क्षमताओं का अपव्यय करे, पुरुष की प्रेरक मार्गदर्शिका और सहयोगी हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

१) हमको दिया परदेश : मृणाल पाण्डे 'राधा कृष्ण प्रकाशन'
२) हम सभ्य औरतें : मनीषा, सामयिक प्रकाशन
३) हम सभ्य औरतें : मनीषा, पृ.१०५
४) कठ गुलाब : मृदुला गर्ग
५) हिन्दी अनुशीलन जून २००४
६) 'बेघर' - ममता कालिया
७) ''एक पत्नी के नोट्स''
८) लक्ष्य बेध : इन्दिरा राय-समय प्रकाशन पटपड़गंज दिल्ली
९) रंगशाला : सिम्मी हर्षिता नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
१०) तिरोहित : गीतांजली श्री राजकमल प्रकाशन
११) खानाबदोश खवाहिशें : जयंती
१२) कुछ अनकही : मृदुला बिहारी

ISSN 2229-5623

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

महाराष्ट्र शिक्षण समिती द्वारा संचलित

महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा

'सृजन'

(स्त्री लेखन : सृजन के विविध आयाम)

मुख्य संपादक
डॉ. व्ही.एल. एरंडे
प्रधानाचार्य

संपादक
प्रा. बी.आर. गायकवाड

सहसंपादक
प्रा. जी.जी. शिवशेट्टे

	पृष्ठ संख्या
	१-४
	५-८
	९-११
	१२-१३
	१४-१५
ा	१६-१७
	१८-१९
	२०-२२
	२३-२४
ा पाटील	२५-२७
	२८-३०
ऽ	३१-३३
)	३४-३५
	३६-३८
अनारसे	३९-४०
साहेब	४१-४३
	४४-४६
ाराव	४७-४८
ा	४९-५१
:	५२-५४
	५५-५६
	५७-५८
	५९-६१
	६२-६४
प्रसादजी	६५-६८
राव	६९-७०
	७१-७४
	७५-७७
	७८-७९
	८०-८२
राव	८३-८५
	८६-८९

अ.क्र.	आलेख शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
३३)	हिन्दी कहानी में स्त्री विमर्श	प्रा.डॉ. रणजीत जाधव	९०-९१
३४)	स्त्री विमर्श : दशा एवं दिशा	प्रा. श्रीमती अर्चना चंद्रकांत पत्की	९२-९४
३५)	हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री लेखन : उपन्यास विधा	डॉ. अर्चना विश्वंभर घोटे	९५-९६
३६)	स्त्री जीवन के विविध आयामों को उभारती कहानियाँ	छाया शंकर माळी	९७-९८
३७)	आत्मकथाओं में चित्रित नारी विमर्श	प्रा. शिंदे संदीप पांडुरंग	९९-१०३
३८)	स्त्री लेखन उपन्यास के संदर्भ में :'बेघर' और 'दिलो-दानिश'	प्रा.सतिश जाधव	१०४-१०६
३९)	'डार से बिछुडी' में नारी जीवन की विसंगती	प्रा. राऊत गजानन	१०७-१०८
४०)	हिंदी कविता में स्त्री लेखन	गोस्वामी श्रीकांत विलासगीर	१०९-११०
४१)	'मुझे चाँद चाहिए' में आधुनिक स्त्री-लेखन	सुश्री. वैशाली अशोक जाधव	१११-११२
४२)	हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं में स्त्री लेखन	प्रा.डॉ. देशमाने पार्वती भगवानराव	११३-११६
४३)	महिला कहानिकारों के कहानियों में नारी विमर्श	प्रा. भिमराव माने	११७-११९
४४)	हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में चित्रित नारी	प्रा. मुंडकर माधव राजण्पा	१२०-१२२
४५)	स्त्री विमर्श, स्त्रीवाद सिद्धांत एवम् व्यवहार	डॉ.आर.डी. मोरे, प्रा. शिंदे आर.व्ही.	१२३-१२४
४६)	महिला उपन्यासकार और आदिवासी नारी विमर्श	प्रा. संजय नाईनवाड	१२५-१२८
४७)	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री	डॉ. चंदा सोनकर	१२९-१३१
४८)	भक्तिकाव्य में स्त्री विमर्श	डॉ. बोईनवाड एन.एन.	१३२-१३४
४९)	स्त्री विमर्श के बहाने	डॉ.एस.एन. गडपायले	१३५-१३६
५०)	नारी चेतना और महिला उपन्यासकार	प्रा.डॉ. शोभा नारायणराव ढाणकीकर	१३७-१३९
५१)	समकालीन हिंदी कहानी और स्त्री विमर्श	प्रा.एन.बी. एकिले	१४०-१४१
५२)	हिन्दी कथा साहित्य में स्त्रीलेखन	प्रा.डॉ. हाके महावीर रामजी	१४२-१४४
५३)	असमत चुगताई का साहित्य : स्त्री लेखन का एक विशिष्ट आयाम	प्रा.डॉ.अ. सत्तार	१४५-१४६
५४)	महाभोज : विभिन्न आयामों को संस्पर्श करनेवाली कालजयी रचना	प्रा. संतोषकुमा गाजले	१४७-१४९
५५)	हिंदी उपन्यास साहित्य	आनंद हिरालाल जाधव	१५०-१५१
५६)	मंजुल भगत का उपन्यास 'लेडीज क्लब' में अपने-अपने सुख के लिए भटकती नारी	डॉ. शेख शहेनाज अहेमद	१५२-१५५
५७)	श्रृंखला की कडियाँ : नारी समस्याओं का दस्तावेज	डॉ. कांचन बाहेती	१५६-१५८
५८)	हिन्दी स्त्रीलेखन : आत्मकथाएँ	डॉ. संगीता शरणप्पा उप्पे	१५९-१६०
५९)	वर्तमान हिंदी काव्य में स्त्री-विमर्श के विविध आयाम	डॉ. माधवी शिवाजीराव जाधव	१६१-१६५
६०)	हिंदी कथा साहित्य में स्त्रीलेखन	डॉ. मीनाक्षी विनायक कुरणे	१६६-१६८
६१)	हिंदी गद्य की अन्य विधाओं में स्त्री लेखन	डॉ. विनायक बापू कुरणे	१६९-१७१
६२)	हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री-लेखन	ठोंबरे उषा तुकाराम	१७२-१७३
६३)	स्त्री-लेखन सृजन का यथार्थवादी आयाम: दुखात्मक संवेदना	प्रा.डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे	१७४-१७७
६४)	महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी	प्रा. दवणे आराधना	१७८-१८०
६५)	'स्त्रीवाद' के परिप्रेक्ष्य से भविष्यकालीन हिंदी साहित्य	शीतल संदीप दाभाडे	१८१-१८४
६६)	श्रृंखला की कडियाँ: स्त्री विमर्श के स्वर	प्रा. सुरेन्द्र गिरधारीलालजी साहू	१८५-१८६

(४२)

हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं में स्त्री लेखन ; आत्मकथा के विशेष संदर्भ में

...✍ प्रा.डॉ. देशमाने पार्वती भगवानराव, सी. के.एस.के. कला, वाणिज्य महाविद्यालय, बीड.

आत्मकथा हिन्दी साहित्य जगत् को ऐसी विधा है जिसे आज पूर्ण रूप से महत्ता प्राप्त हो गई है। आज आत्मकथा लेखन, हेतु आत्मकथाकार बड़ी सजगता और लगन बरत रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला साहित्यकारोंने भी अपने प्रतिभा का परिचय देते हुए कथा साहित्य लेखन में अपना एक अलग स्थान बनाया है। कविता लेखन के क्षेत्र में महिलाएँ थोड़ी पिछे ही रही ऐसा कहे तो गलत न होगा, पर आत्मकथा लेखन में बीसवी सदी से प्रयास रत रही है।

आत्मकथा इस तथ्याश्रित विधा का विकास आधुनिक काल में हुआ। आत्मकथा किसे कहते है? आत्मकथा की सबसे आसान परिभाषा है- "स्व के जीवन की स्वरचित कथा"। वस्तुत: 'स्व' को किसी न किसी स्तर पर अभिव्यक्त करने की इच्छा शाश्वत और विश्वजनीन है। यह इच्छा मानव-जाति में सभ्यता के आदिम काल से रही है। विश्व के प्रथम कलाकार ने इस इच्छा के वशीभूत होकर जिस किसी स्तर का प्रयास किया होगा, उतना वह महत्वपूर्ण न भी हो, तब भी इतना तो निश्चय ही कहा जा सकता है कि उसका वह प्रयास अपनी अभिव्यक्ति की उच्छा को संतुष्ट करने के लिए ही रहा होगा। समयांतर से सभ्यता के विकास के साथ अनुभूति को अभिव्यक्त करनके के लिए मनुष्य ने भिन्न-भिन्न माध्यम ढूंढ निकाले। कुछ कलाकारों ने अपनी अनुभूतियों को रंगो के माध्यम से व्यक्त किया, तो कुछ ने पत्थरों के माध्यम से, कुछ ने स्वरों के और कुछ ने शब्दों के माध्यम से और इसी अंतिम कलात्मक माध्यम को हम साहित्य कहते है।

पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव के फलस्वरूप भारतेन्दु युग में इस विधा का आरंभ हुआ है। भारतेन्दु ने 'कुछ आपबिती कुछ जग बिती" का लेखन-प्रारंभ किया था जिसके कुछ अंश प्रकाशित हुए है। हिन्दी के आत्मकथा साहित्य में जैन कवि बनारसीदास की आत्मकथा को प्रथम आत्मकथा कहा जाता है। आत्मकथा साहित्य में जानकीदेवी बजाज का नाम हम पहली महिला आत्मकथाकार के रूप में ले सकते है। सन १९५६ में प्रकाशित जानकी देवी बजाज की 'मेरी जीवन यात्रा' एक अद्‌भुत आत्मकथा है। यह एक ऐसी स्त्री की आत्मकथा है, जिसे संयोगवश स्वाधीनता संग्राम शीर्षस्थ नेताओं का सहवास मिला। आपने अपनी योग्यता के अनुरूप देश की सेवा की। विशेष कर वर्धा से आनेवाले भारतीय नेताओं की आवभगत में आप अत्यन्त निपुण थी। जानकीदेवी की कृती के सम्बन्ध में विनोबाजी प्रस्तावना लिखते है। "जानकीदेवी को जो भी विद्या मिली है, वह अनुभव से मिली है। इसमें पढ़ाई लिखाई का ज्यादा अंश नही है। इसलिए उनकी यह कहानी बहुत ही सरल भाषा में कही गई है। यह लिखी नहीं गई है। जबानी कही गई है।" इसमें अपने बाल्य काल से लेकर अपने पति जमनालालजी के देहावासन तक की घटनाओं को वर्णित किया हैं। इतिवृत्तात्मकता के कारण इस आत्मकथा में अंतर्बाह्य के निरीक्षण का नितांत अभाव दीख पडता हैं। आत्मकथा लेखन के हेतु जिस गम्भीर दृष्टिकोण की आवश्यकता हुआ करती हैं, उसका अभाव इस आत्मकथा में नजर आता हैं।

'खानाबदोश' १९८७ में लिखी अजीत कौर की आत्मकथा हैं। जिसे १९८६ का साहित्य आदमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आठ शीर्षकों के माध्यम से अपनी जिन्दगी का भोगा सच इस आत्मकथा में दिखाई देता हैं। इस आत्मकथा की शुरूवात ही लेखिकाने इस वक्तव्य से की, "दर्द ही जिन्दगी का आखरी सच हैं। दर्द और अकेलापन, आप न दर्द साझा कर सकते हैं न अकेलापन।" इसे पढ़ने के उपरान्त यह कहना भी ठीक लगता हैं कि जीवन के अनेक रूप और रंग है। ऐसे में दर्द का रंग किस तरह का होता हैं ? यह आत्मकथा कई शीर्षकों में लिखी गई है। प्रथम शीर्षक वन-जीरो-वन यह ऐसा नम्बर हैं जिसे घुमाने से आग बुझाने वाले आते हैं। शायद अपने मन के दु:ख दर्द की आग बुझाने के लिए उसे यह नम्बर याद आता हो, यह शीर्षक ही लेखिका के मन की समस्त आग व्यथा को अभिव्यक्त करता है। इस शीर्षक से अंतर्गत लेखिकाने अपनी दो बेटियाँ कैंडी और अपर्णा तथा वह स्वयं अपने परिवार का चित्रण किया है। छोटी

ISSN 2229-5623

बेटी डेढ़ महिने पहले फ्रान्स गयी थी। वह जवाहरलाल नेहरू युनिवर्सिटी से फ्रेंच में एम.ए. कर रही थी लेकिन पॅरिस से लेखिका को उसके जल जाने का फोन मिलता है। इस आत्मकथा जहाँ एक ओर अपना दुःख है, वही लंदन में बेटी के दुःखद निधन से आहत मातृहृदय का चित्रण भी मिलता है। अपने हृदय की कथा का चित्रण करते हुए लेखिका लिखती है ध्अचानक उस डॉक्टरने एक पिंजरा सा उठा दिया, जिसके उपर चादर डालकर उसे ढाँका हुआ था, जले हुए मॉस की तेज दुर्गंध गले से पैरोंतक आलू की तरह भुनी हुई। अगर कोई भी उस वक्त मुझे उसके साथ बदल देता, उसका कर्जा में दस जन्म उतारती रहती। अब भुनने की बारी मेरी थी। और में आजतक भुन रही हूँ। नंगे दहकते अंगारोंपर।ड्ड

खानाबदोश आत्मकथा की विशेषता यह है कि एक महिला द्वारा लिखी गई है और संघर्ष की सच्ची कहानी भी है। अजीत कौरजीने जिंदगी में ऐसी यातनाओंको भोगा है कि पाठक के रोयें खडें हो जाते हैं लेकिन अंततः विजय भी उसकी होती है, जो चलता हैं। इसमें जहाँ एक ओर बेटी होने का आभास का दुःख हैं वहीं पिता के घर में शिक्षा से अधिक घ्नारी सुरक्षाङ का ध्यान रखा गया इसका खेद है। आशा निराशा में डूबती इतराती सतत संघर्ष करती लेखिका बस जिए जा रही थी। आत्मकथा का शीर्षक सटीक है क्योंकि कभी घर का सुख जाना ही नहीं। 'खानाबदोश' की जिंदगी जी। इसमें कोई भी घटना काल्पनिक नहीं लगती यही कारण है कि इसे पुरस्कार भी प्राप्त है। लेखिका का भाषापर पूर्ण अधिकार है उन्होंने अपने दुःखो को अपनी कथा में सजीव कर दिया हैं दुःख मानों शब्द बनकर बोलते है यही लेखन कौशल प्रकट हुआ हैं लेखिकाने बडी साफगोईसे अपनी कथालिखी है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आदि विविध आयाम इस आत्मकथा के हैं।

अजीत कौरजीके आत्मकथा का दूसरा खण्ड है 'कुडा कबाडा' के फ्लैप पर पंक्तियाँ है "इतनी भयानक टूट-फूट में से इतना नकारा, बेकार बेवकूफ और डरी- सहमी औरतमें से कब एक निडर, बेखौफ अपने जीवन के सभी फैसले खुद लेने की हिम्मत और हौसला करनेवाली औरत पैदा हो गयी, इसी ट्रांसफॉर्मेशन यानि कायाकल्प की दास्तांन सुनाना चाहती हूँ आप सबको।"यह कहानी अकेली उनकी कहानी नही रही है, यह भारत की हर उस औरत की कहानी बन जाती हैं जिसे हमेशा कूड़ा-कबाड़ा समझा जाता रहा है, जो खुद को कूड़ा कबाडा समझती है। सहना, समझोता करना, अपने अस्तित्व को मिटा देना, जिसकी नियति होती है आत्मकथा का शीर्षक कुड़ा कबाडा अत्यन्त प्रतीकात्मक है जो औरत की सामाजिक स्थिति की ओर संकेत करता हैं। इस दृष्टि से इसे सामाजिक आत्मकथा कहा जा सकता है। पिता, भाई और नामक तीनों पुरूष अजीत कौर के जीवन को कठपुतली बना देता है। यह आत्मकथा जब अजीत कौर ने लिखी तब वे प्रौढ लेखिका के रूप में स्थापित हो चुकी थी। इसीलिए उनके लेखन में अपनी ही कहानी की ओर देखने का एक तटस्थ दृष्टिकोन दिखाई देता हैं। अपनी कहानी को उन्होंने औरत की कहानी बना दिया है यही इस आत्मकथा की खूबी हैं। भावपक्ष और कलापक्ष, की दृष्टि से सर्वोच्च दर्जे की आत्मकथा कही जा सकती है अकादमी का पुरस्कार पाना, जबकि परिवार में लडकियाँ पढ़ाना गुनाह माना जाता था, अजीत कौर की योग्यता का प्रतीक है।

पद्मा सचदेव की घ्बूंद-बावडीङ एक ऐसी आत्मकथा है जो पाठकों को अंदर तक दहला देती है और फिर मानो स्वयं रास्ता भी बता देती है। इस आत्मकथा में पद्माजीने कई सवाल उठाये है। जैसे क्या समाज की यह प्राचीन परंपरा अपने आप टूटेगी ? क्या महिलाओंको पुरूष रूपी पति समझ पायेगा ? क्या सभी इस रूप में बूरे ही होते है? न जीने कितने प्रश्न इस आत्मकथा को पढकर पाठकों के समक्ष उपस्थित होते हैं। इस आत्मकथा में पद्माजीने अपने समय की अंर्तकथा को चित्रित किया है। यह कालखंड उनके जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनाओं का अंकन हैं। इसमें लयबध्दता भी है और साथ ही नाटकीयता भी। इसे केवल आत्मकथा नहीं कहा जा सकता है। बल्कि जीवन की उन बीती घटनांओं का चित्रण हैं। जो लेखिकाने भोगा हैं, देखा है और सुना हैं, 'दो शब्द' शीर्षक के अंतर्गत उन्होंने लिखा हैं।

"मेरी ये स्मृतियाँ आत्मकथात्मक होने पर भी अपने से ज्यादा दुनियाँ से जुडी हुई है। इसमें आपबीती भी है और जगबीती भी। पदमाजीने इसे बखूबी निभाया हैं, उनकी अपनी सोंच हैं, अपनी दुनिया हैं और उसी सोंच कों उनके लोक गीतों में देखा जा सकता है। परिस्थितियों का चित्रण एवं पृष्ठभूमि इस आत्मकथा को विश्वसनीय को बना देती है। बूंद और बावडी का प्रतीक व्यष्टिमें समष्टि के

संबंध को सफला से प्रदान करता हैं। आत्मकथा में स्वनिरीक्षण भी हुआ हैं मनोभावों की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से की गयी हैं। परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हो लेखिका डिगती नहीं हैं। अपने मन को वश में रखना भी उनका एक गुण है। वे लिखती हैं। घड़ पति के द्वारा परेशान किये जाने पर मैं माँ के घर आ गई। माँ शांत थी। उन्होंने खाना खिलाया और मैं निढाल होकर मायग्रेन की गोद मेंसोती रही।डड लेखिका आत्मविश्वासी, दृढ़प्रतिज्ञा एवं अदम्य जिजीविषा, लेकर इसमें उपस्थित हुई हैं। इस आत्मकथा के माध्यम से पद्माजी के अंतर्मन को भी पढ़ा जा सकता हैं। उनके लेखन शैली का एक अनुठा रंग हैं। भाषा शैली ऐसी हे कि पाठक एक बार पुस्तक अगर हाथ में लेगा तो समाप्त करके ही छोडना चाहेगा। भाषा शैली साहित्यिक सहज एवं सरल है। सृजनशील कलात्मक एवं संगीतमय वातावरण का भी बोध इसके माध्यम से पाठकों को मिलता हैं, बड़ी-बड़ी हस्तियों के कार्य कलापों एवं स्वभाव का भी बोध होता हैं। तलाशशुदा नारी के प्रति सामाजिक दृष्टिकोन शायद कभी नहीं बदलेगा चाहे वह कितना भी शिक्षित क्यों न हो जाए।

कुसुम अंसल की 'जो कहां नही गया' १९९९ में प्रकाशित जीवनीरूपी आत्मकथा हैं। इसे बीसवी सदी के अंतिम छौर की आत्मकथा कहना उचित होगा। दर असल उन्होंने इसे जीवनी कहा हे किंतु अपनी पुस्तके के फ्लैप पर उन्होंने लिखा हैं, "मैं अहंवादी नहीं हूं, अपने को परिचित कराने में संकोच आज भी मेरे भीतर हैं। पता नहीं क्यों लिखने बैठ गई हूं। इस बार उपन्यास के स्थानपर अपने जीवन को ही उठा लिया।" लेखिका जहाँ एक ओर जीवन को प्रस्तुत करने का दावा करती है वहीं दूसरी ओर इसे जीवनी कहती हैं। वह फ्लैप पर ही लिखती हैं। "मेरी जीवनी हमारे परिवार का कोई ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं हैं, ये मात्र मेरे जीवन का सारतत्व हैं।" यह भी अपने जीवन के बयान का एक नया तरीका हैं। जीवनी कोई भी व्यक्ति किसी की भी लिख सकता हैं किंतु आत्मकथा नहीं। यहाँ पर एक नई बात यह दिखाई देती हैं कि लेखिका लिख तो अपने बारें में रही हैं, किंतु उसे आत्मकथा न कहकर जीवनीकी सपाट बयानी कहती हैं। वह सफाई देते हुए कहती है कि मेरा यह लेखन मेरी वह यात्रा हैं जिसमें प्रवाहित होकर मैं लेखिका बनी थी, मेरे उन अनुभवों का कच्चा चिट्ठा, जिनको अपने प्रति सचेत होकर मैंने रचनात्मक क्षणों में जिया था। अपनी कथा यात्रा में कल्पना प्रयोग नहीं हो सकता था, तभी तो किस्सा बयानी न होकर सपाट जैसी हें- उसके लिए मैं दोषी नहीं हूं जैसी थी, वैसी 'ज्यों की त्यों धर दिन्ही चदरिया'

इस आत्मकथा की प्रस्तुति भले ही अपने उद्देश्य को सफल बनाती हो लेकिन पाठको के लिए यह जीवनी निरस हो सकती है। इसका कारण यह कि उनका व्यक्तित्व एकांगी है। वह महिला और लेखिका हैं बस यही शायद आत्मकथा के विवेचन को गरिमा नहीं प्रदान कर सका। लेकिन जानकारियाँ और घटनाएँ इतनी भी कम नहीं हैं कि उनके वजूद को स्थापित न कर पाए। लेखिका में संघर्ष से गुजर पर आशावादी दृष्टि तो पनपी लेकिन सामाजिक और राजनीतिक अनुभव कम होने के कारण एक रसता हैं। अन्य महिला लेखिकाओं की तरह इन्हें भी देह का अनुभव प्राप्त हुआ हैं। आत्मकथा की भाषशैली ठीक हैं। कुसुम अंसलजी अपनी जीवनीपरक आत्मकथा के माध्यम से भले ही पाठकीय संभावनाओं को पूरा कर पाने में सक्षम न रही हो किंतु एक परिश्रमी, शिल्पकार और सृजनकर्ता या सृष्टा के रूप में अवश्य ही सफल हुई हैं।

कौसल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' यह आत्मकथा सन १९९९ में प्रकाशित हुई। बैसंत्रीजीने नेमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मिक,शरद कुमार लिंबाळे की ही भाँति अस्पृश्य समाज में जीनेवाली नारी की करूण गाथा को प्रस्तुत किया हैं। लेखिका स्वयं दलित समाज में पैदा हुई हैं और जो कुछ भी पीडा इन्हें इससे उठाने पडी उसी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया हैं। उनके अनुसार आत्मकथा सीधी सरल शैल में लिखी गई 'स्व' ही विश्लेषण नहीं करती, अपितु भोगे हुए यथार्थ को शब्दों में उतारने का प्रयत्न करती हैं। इसमें वर्णित, सामाजिक, सांस्कृतिक और दलित चेतना संबंधी राजनीतिक परिवेश ने उसे प्रामाणिक बनाने में सहयता की हैं। उन्होंने अपनी माताजी, पिताजी से लेकर अपने व्यक्तिगत जीवन के प्रसंग भी बखूबी चित्रीत किए हैं। दलित समाज का चित्रण संवेदनात्मक एवं सजीव बन पडा हैं। उस समाज के रीतिरिवाज छुआछूत, खान-पान आदि सभी का प्रस्तुतीकरण यथार्थ कहा जा सकता है। बस्ती में रहनेवाले लोगों के चित्रण के साथ साथ दलित वर्ग में प्रचलित धार्मिक अंध विश्वासों एवं सामाजिक मान्यताओं का भी ब्यौरा प्रस्तुत किया है। लेखिका डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के प्रभाव का वर्णन करते हुए लिखती हैं, "बाबासाहब ने जहाँ बौध्द धर्म की दीक्षा ली थी, उस भूमि को दीक्षा भूमि कहते हैं। दशहरे के दिन बाबासाहब ने बौण्द धर्म की दीक्षा ली थी।" महिला होने के कारण उन्हें परेशानियाँ उत्पन्न करती हे इस आधार

पर लेखिकाने शीर्षक दि
अत्यंत आवश्यक हैं। शि
तक जाने के लिए प्रेरित
मैत्रेयी पुष्पा व
इस आत्मकथात्मक उप
गई है। अपनी आत्मकथ
लगाव और दूराव की अ
आज भी भारतीय समाज
व्यक्त हो गया हैं। उनके
भी दिया।
समाज की वि
महिला मंगल की सभा
असहाय और मदों की
इस प्रकार ज
लेखन के प्रमुख हस्ताक्ष
वालों की संख्या बहुत
महिला आत्मकथाकार

संदर्भ ग्रंथ :

१) हिन्दी साहित्य
२) हिन्दी आत्मक
३) हिन्दी आत्मक
और विकास
४) जो कहा नहीं
५) दोहरा अभिश
६) कस्तुरी कुंड

ISSN 2229-5623

पर लेखिकाने शीर्षक दिया हैं, 'दोहरा अभिशाप' एक खास बात इस रचना की हैं कि यदि किसी को भी विकसित होना हैं तो शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक हैं। शिक्षा प्राप्ति के लिए किसी भी परेशानीसे जुझना ही विकास की सीढी हैं। आत्मकथा महिलाओं को राष्ट्रीय स्तर तक जाने के लिए प्रेरित करती है एवं ज्ञान प्राप्ति से हर दुःख दूर होगा इसकी स्थापना करती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा का घ्कस्तुरी कुंडल बसैड सन २००० में प्रकाशित आत्मकथा हैं, जिसे आप ने आत्मकथात्मक उपन्यास कहा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास को महत्व हिन्दी साहित्य जगत में इस कारण है कि अभी भी महिलाओं की गिनी चुकी आत्मकथा एें लिखी गई है। अपनी आत्मकथा के संदर्भ में लेखिका लिखती हैं, "यही है हमारी कहानी। मेरी और मेरी माँ की कहानी। आपसी प्रेम, घृणा, लगाव और दूराव की अनुभूतियाँ से रची कथा में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो मेरे जन्म के पहले ही घटित हो चुकी थी।"लेखिका के अनुसार आज भी भारतीय समाज में नारी मात्र वस्तु और मनोरंजन का साधन बनी हुई हैं। ऐसे में मैत्रेयी पुष्पाजी का अनुभव बड़ी सहजता से व्यक्त हो गया हैं। उनके अनुसार महिलाओं में शक्ति हैं यह बातो हुए कठिन समय में जुझने की प्रेरणा दी है और नारी स्वातंत्र्यका परिचय भी दिया।

समाज की किसी भी बुराई का अंत यदि करना हैं तो शिक्षा आवश्यक हैं यह भी संदेश उनकी आत्मका से प्राप्त होता हैं। महिला मंगल की सभा में समाज सेविका के रूप में मैत्रेयी पुष्पाजी की माँ स्त्रियों के दुःख दर्द की दुहाई देते हुए कहती है कि, अबला, असहाय और मर्दों की दुनिया से पीटकर खदेडी गई औरतों के लिए तुझ जैसी सामर्थ्यवान लडकी के पास सहानुभूति तक नहीं हैं।

इस प्रकार जानकी देवी बजाज, अजीत कौर, पद्मा सचदेव, कुसुम अंसल, कौसल्या बैसंत्री और मैत्रेयी पुष्पा आत्मकथा लेखन के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वैसे भारतेन्दु काल से ही हिन्दी आत्मकथा का विकास बहुत धीमी गति से हुआ था। आत्मकथा लिखने वालों की संख्या बहुत ही कम थी। पहले लिखनेवाले विशिष्ट होते थे अब प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट है और लिखना चाहता हैं। इसमें महिला आत्मकथाकार पिछे कैसे रह सकती हैं?

संदर्भ ग्रंथ :

१) हिन्दी साहित्य का इतिहास - शिवकुमार शर्मा

२) हिन्दी आत्मकथा - डॉ. नारायण शर्मा

३) हिन्दी आत्मकथा स्वरूप विवेचन और विकास क्रम - डॉ. सविता सिंह

४) जो कहा नहीं गया - कुसुम अंसल

५) दोहरा अभिशाप - कौसल्या बैसंत्री

६) कस्तुरी कुंडल बसै - मैत्रेयी पुष्पा